नब्बे दशकोत्तर मराठी काव्य का परामर्श

सुनीता सु. उम्रस्कर

काव्य सांस्कृतिक जीवन को पुरातन काल से व्यापकता प्रदान करनेवाला मूलभूत साहित्य प्रकार है। साहित्य यह संज्ञा जितनी मूलभूत, संश्लिष्ट, समावेशक एवं सम्मिश्रण होती है उतना ही उसको विश्लेषित करना अधिक कठिन होता है। काव्य ऐसा ही एक साहित्य प्रकार है।

मराठी काव्य की बहुत महान परम्परा रही है। जिसके एक विशाल समूह एवं उसकी सांस्कृतिक संचित-पूँजी दिखाई देती है। काव्य एक आत्मनिष्ठ साहित्य प्रकार है, इसलिए जब जीवन ही कविता बनती है तो वह अधिक प्रभावी होती है। मराठी सन्तकाव्य ऐसे ही ढाँचे में ढला हुआ साहित्य है, जो कि अभी तक मराठी साहित्य में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाए हुए है। इस दीर्घकालीन परम्परा के दो कालखण्ड माने जाते हैं। एक मध्ययुगीन मराठी काव्य और दूसरा अर्वाचीन मराठी काव्य। मध्ययुगीन मराठी काव्य की परम्परा तेरहवीं शताब्दी से प्रारम्भ हुई। महाराष्ट्र में 1818 में अंग्रेजी सत्ता के आने से जो बदलाव आया। जिसमें अंग्रेजी के ज्ञान-विज्ञान से नए-नए मूल्य निर्माण होने लगे। फलस्वरूप जीवन के प्रति दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आया। यह परिवर्तन सांस्कृतिक परिवर्तन था। अब अर्वाचीन मराठी काव्य को एक शताब्दी से अधिक समय हो गया है। 1994 से काव्य के इस नए युग का आरम्भ हुआ। इसके उपरान्त मराठी काव्य में परिवर्तन होता रहा। आरम्भ से ही अनेक साहित्य सम्प्रदाय निर्माण हुए। उससे मराठी काव्य हमेशा प्रवाहित होता रहा। क्रान्ति की नई क्षितिज विश्वसाहित्य के सन्दर्भ में अपना स्थान लेने का प्रयास करने लगी। मराठी साहित्य में भी अनेक साहित्यिक आन्दोलन हुए। इन्हीं परिवर्तनों से आज तक का मराठी साहित्य समृद्ध हुआ।

प्रस्तुत पत्र में 1998 से 2002 तक के मराठी काव्य में जो वृत्ति-प्रवृत्तियाँ दिखाई देती है उनको नब्बे दशकोत्तर मराठी काव्यसाहित्य में समाहित करने का प्रयास किया गया है। इस दशक को मराठी काव्य-साहित्य का एक महत्वपूर्ण काल माना जा सकता है परन्तु पार्श्वभूमि का अभाव टिप्पणी न रहे, इसी हेतु किंचित रूप से निम्नलिखित टिप्पणी कर रही हूँ।

मुद्रणकला, भौतिक अनुसंधान, विज्ञाननिष्ठ लौकिक जीवनदृष्टि, यन्त्रयुग आदि का प्रभाव आधुनिक जीवनदृष्टि पर पड़ रहा है। ये सभी घटनाएँ एक-दूसरे पर प्रभाव डालती रही हैं। फलस्वरूप जीवन-विषयक मानवमूल्य की धारणाएँ इस काल में बदलीं।

व्यवहार की अनेक गतियवधियों पर इसका प्रभाव पड़ा। इससे गद्य साहित्य का निर्माण हुआ। बदलते समय के अनुसार साहित्य निर्मिती का प्रयोजन और प्रेरणा दोनों बदल गए। काव्य क्षेत्र में भी बदलाव दिखाई दिया।

1994 में कवि केशवसुत की पहली कविता हुई। तदोपरान्त मराठी काव्य में अनेक परिवर्तन दिखाई दिए। अधिकतर इन कविताओं की रचना आशयुक्त करने का प्रयास किया गया। अलग-अलग कालखंड में जो काव्यरचनाएँ हुई हैं, उन सब काव्यप्रवृत्तियों का उद्‌गम कवि केशवसुत के काव्य में दिखाई देता है। इस काल तक के उनके कवि अपनी-अपनी वृत्ति-प्रवृत्ति के अनुसार काव्य लेखन करते रहे। परिणामतः उन्होंने स्वयं का अलग दृष्टिकोण बनाए रखा। समीक्षकों की दृष्टि में काव्यगत जो प्रमुख प्रवाह दिखाई देते हैं उनमें अनेक प्रमुख कवियों के काव्य ने मराठी काव्य का स्तर बढ़ाया है। आज के काव्य का स्वरूप जानने के लिए गत शताब्दी के मराठी काव्य का स्वरूप संक्षिप्त रूप से देखना महत्वपूर्ण रहेगा।

1818 से 1875 का कालखंड याने प्राचीन मराठी काव्य का युगान्त। 1976 से 1885 तक के कालखंड को अर्वाचीन काव्य के संक्रमण का युग कहा जाता है। जिसे रा. श्री. जोग ने 'क्रान्तिपूर्व काल' कहा है। 1883 से 1920 तक के काल को 'क्रान्तिकाल' कहा जाता है। अर्वाचीन मराठी काव्य का स्वरूप इस काल में सम्पूर्ण रूप से बदला और स्थिर हो गया। इस काल को 'केशवसुत काल' भी कहा जाता है। सहसा स्थाईवृत के बंधन को न'तोड़नेवाली, थोड़ी बहुत शृंगारिक तथा लौकिक जीवन पर कटाक्ष डालने वाली और प्रमुखतः अपनी दृष्टि केवल परमार्थ पर ही केन्द्रित करनेवाली, प्रदीर्घता ही काव्य की मुक्त होनेवाली लौकिक जीवन के सादे विषय में भी बड़ा आशय देखनेवाली, वैयक्तिक आविष्कार को अपना वैशिष्ट्य बनानेवाली एवं अंग्रेजी चाल-चलन की नई कविता को मराठी साहित्य में स्थापित करने का श्रेय कवि केशवसुत को जाता है। अतएव काव्य समीक्षकों ने उन्हें 'आधुनिक मराठी काव्य के जनक' की उपाधि से विभूषित किया। उसी समय ना.वा.तिलक, विनायक, बालकवि, बी. दत्त आदि कवि अपनी-अपनी विशेषताएँ लेकर काव्य रचने लगे।

1920 में भा.रा. तांबे ने एक अलग-सा सम्प्रदाय निर्माण किया, वो है 'गीतसम्प्रदाय'। केशवसुत के काव्य में एक आक्रामकता थी, तो ताँबे की काव्य प्रतिभा में प्रसन्नता दिखाई देती थी। 1923 में स्थापित किए गए रवि किरण मंडल के आश्रय में काव्य रचना करनेवालों में माधव ज्यूलियन, गिरिश तथा यशवन्त प्रमुख कवि रहे। इन कवियों ने केवल कविजन में ही नहीं बल्कि उससे बाहर कविता प्रचलित की। काव्य में अनेक प्रयोग किए गए। इससे गजल, सुनीत आदि काव्य प्रकार निर्माण हुए। काव्य चर्चा इन्हीं कवियों के कारण प्रस्फुटित हुई। इसी काल में आचार्य प्रह्लाद केशव अत्रे उपाख्य केशवकुमार का विडम्बनकाव्य निर्माण हुआ, जो मराठी साहित्य के लिए एक नाविन्य पूर्ण घटना थी। 1940 के बाद कुसुमाग्रज, बा. भ. बोरकर आदि कवियों ने अपनी एक अलग ही पहचान बनाई। निसर्गसृष्टि, प्रेमभाव और अध्यात्मभाव मिश्रित स्वरूप में अपने काव्य में लाकर अलग पहचान दी।

1945 में एक और काव्य युग की स्थापना हुई जिसे 'नवकाव्य' कहा गया। जिसके प्रवर्तक थे बा.सी. मर्ढेकर। इस काल के काव्य पर केशवसुत सम्प्रदाय, ताम्बे सम्प्रदाय, रविकिरण मंडल के काव्य की रंगछटा दिखाई देती है। काव्य आशय, काव्यभाषा और काव्यस्वरूप सम्बन्ध में जो क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए उनमें मर्ढेकर प्रमुख रहे जिन्होंने केशवसुत परम्परा को तोड़कर अपनी एक अलग पहचान बनाई। आशय और अभिव्यक्ति की दृष्टि से यह सम्पूर्ण नया काव्य था। केशवसुत की तरह मर्ढेकर ने भी पाश्चात्य काव्य से ही प्रेरणा ली। नवकाव्य में जो सामाजिक अभिव्यक्ति हुई है, वह है दो महायुद्ध और उनके संहारक दुष्परिणाम। विज्ञान ने प्रगति के बजाए मानव को अधोगति की ओर ले जाना, यन्त्रयुग द्वारा मानव को यन्त्र बना डालना, साम्राज्यवाद और पूँजीवाद का उद्‌गम, मानवी जीवन और प्रेरणा का संकुचन, सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास, मानवता की होली का दहन, मानवता की विडम्बना, जीने का और मरने का भी बन्धन, जीवन और अन्तर्जीवन में परिवर्तन लाने वाली शहरी कृत्रिम संस्कृति, नए सामाजिक स्थिति के बढ़े हुए तनाव, सामान्य मनुष्य की बेबसी, असहाय्यता, अनुभव में आनेवाली विफलता और निराशा इन सब सामाजिक वास्तविकताओं की वैयक्तिक प्रतिक्रिया इस काव्य में नई थी। वीरान जीवन की इस भीषण विभीषिका का दर्शन करने का धैर्य अभी तक के काव्य में

दिखाई नहीं दिया था। इस वास्तविक जीवन की दो प्रतिक्रियाएँ काव्य में उभरकर सामने आई है। मर्ढेकर काव्य का विफलतावाद, अहंवाद और व्यक्तिवाद दूसरी ओर शरच्चंद मुक्तिबोध का आशावादी, समाजवादी और मानवतावादी दृष्टिकोण। इन दोनों कवियों का विद्रूपता के विरुद्ध विद्रोह था। मर्ढेकर के काव्य में बीभत्सता, घृणा, विडम्बन, उपहास आदि चीजों का विद्रोह दिखाई देता है, जो मानवता, सत्य और शिव का बीज है तो मुक्तिबोध के नवकाव्य में मार्क्सवाद के आधार पर समाजक्रान्ति, वर्ग-विग्रह और आशावादी निष्ठा दिखाई देती है। एक नई काव्य दृष्टि ही नवकाव्य की जननी है। यह वास्तविकता हम सभी अभ्यासकों को ज्ञात है।

नवकाव्य के आशय पर एक और परिणाम दिखाई देता है वो है मनोविज्ञान एवं वैज्ञानिकता की प्रवृत्ति। इस प्रवृत्ति को इस नए काव्य ने स्वीकार किया। मराठी कवि अपने जीवनानुभवों को विशिष्ट प्रतिमानों के द्वारा प्रकट करने लगा। जो अलग ही प्रतिमानों का विश्व था। इस तरह इस नवकाव्य में आशय, प्रतिमान, रचना, शैली आदि सब काव्य घटक और संकल्पनाएँ बदल गईं। दुर्बोधता एक और नवकाव्य का गुण रहा है। पु.शि.रेगे, विंदा करंदिकर, गं.ब. ग्रामोपाध्याय आदि नवकवियों ने अपना एक अलग प्रकार का ही काव्य रचा। पुराने ढाँचों और संकेतों को तोड़कर एक अलग ढंग की काव्य रचना निर्माण की गई। जिसे आत्मनिष्ठा को एक नए अनुभव और प्रमाणिकत्व का अर्थ दिया।

महाराष्ट्र में 1960 के उपरान्त नई जीवनधारा, नई संवेदना जागृत हुई और मराठी काव्य का विकास होता रहा। इनमें ग्रामीण साहित्य, दलित साहित्य, जनवादी साहित्य, स्त्रीवादी साहित्य आदि साहित्य प्रवाह निर्माण हुए। काव्य सम्बन्ध में काव्य समीक्षा के पुरातन मूल्य ध्वस्त हुए। पुरानी मान्यताओं और जीवन-मूल्यों के आधार पर नई तत्वप्रणाली तोलने के लिए नए कवि तैयार नहीं थे। विद्रोह के अनेक स्वर उमड़ पड़े। इस संतप्त पीढ़ी का विद्रोह आगे जाकर सामाजिक बंधनों को मानने वाले मार्क्सवादी एवं दलित काव्यप्रवाह में शामिल हो गए। सामाजिक बंधनों को न माननेवाले, सब परम्पराओं को नकार देनेवाले कवियों ने अपने काव्य में अस्तित्ववाद का विचार शुरू किया। चित्रे-डहाके जैसे कवियों के काव्य में यह अस्तित्ववाद दिखाई देता है। और बोरकर रेगे जैसे सौन्दर्यवादी/रूपवादी काव्य परम्परा चलानेवाले नवस्वच्छन्दतोन्मुख कवि आरती प्रभु, गेस, महानोर फिर से रोमांटिक भावकाव्य लिखने लगे। साठोत्तर मराठी काव्य क्षेत्र में प्रस्फुटित हुई संतप्त पीढ़ी की कविता वस्तुतः पारम्परिक सीमा तोड़नेवाली प्रयोगशील कविता थी। एक ओर 'विशुद्ध कलावाद' से विशिष्ट कल्पनाओं का जोर था तो दूसरी ओर सामाजिक परिस्थिति का दबाव, ऐसे तनावग्रस्त धारा में काव्य निर्माण हो रहा था।

सन् 1965 से 1975 तक के काल में एक संतप्त पीढ़ी की लघु-अनियतकाल पत्रिका का आन्दोलन निर्माण हुआ। इस कालखण्ड में आई हुई कविता अकृत्रिम, मुक्त और सीधी भाषा का प्रयोग करने लगी। स्वातन्त्र्योत्तर मराठी साहित्य में यह एक बड़ा योगदान रहा। आन्दोलन के मूल प्रवर्तन में तीव्र सामाजिक और साहित्यिक जीवनधारा थी। देशी-विदेशी भाषा में होनेवाले नए-नए साहित्यिक प्रवाह की उन्हें जानकारी थी। जीवन में दिखाई हुई तीव्र निराशा और वैफल्य, सार्वत्रिक अर्थशून्यता की अनुभूति, व्यक्ति की स्वातन्त्रता पर होनेवाला अनेक विध बंधनों का बोझ, घुटन देनेवाली प्रस्थापित व्यवस्था, इससे आनेवाली विलक्षण असहाय्यता, बेबसी, असुरक्षा की भावना से जकड़ा हुआ मनुष्य का मन, अपने क्षुद्रत्व की भावना, समाज से अलग होने की भावना, पारिवारिक वातावरण से उत्पन्न तनाव आदि सभी इस काव्य का केन्द्रबिन्दु रहा है। इसमें अनेक दलित और ग्रामीण कवियों का समावेश होता है। मजदूर वर्ग के अनुभव से और साम्यवादी तत्वज्ञान के संस्कार से आई हुई नारायण सुर्वे की कविता ने मराठी काव्यविश्व को एक ओर आविष्कार की तरफ ले जाकर ये कविताएँ अधिक आवाहक और प्रभावशाली बनीं।

साठोत्तरी काव्यपीढ़ी का आदर्श सामने रखकर नब्बे दशकोत्तर मराठी काव्य की पीढ़ी अनियतकाल पत्रिकाओं के आन्दोलन से अपनी काव्य ऊर्जा ग्रहण कर रही थी। साठोत्तरी काव्य का स्थान तो यह काव्य नहीं ले सका, परन्तु इसने अपनी दिशाएँ खुद निश्चित कीं, जो बंधनमुक्तता की ओर जा रही थी। इस काल के साथ, आन्दोलन के साथ अपना नाता बना रही थीं। नब्बे दशकोत्तर मराठी काव्य अपने आविष्कार के मुक्ति के लिए अनियतकालिकाओं के आन्दोलन का आधार ले रहा था। इसी आन्दोलन को मराठी में 'निकडीची चलवल' नाम से सम्बोधित किया गया। जिसका सम्बन्ध आज की मराठी काव्य कविता से है।

क्या नब्बेदशकोत्तर काव्य एक साहित्यिक आन्दोलन हो सकता है? यह विचारणीय प्रश्न है। वाङ्मयीन आन्दोलन एक काल परिमाण से प्रारम्भ होता है और उसके उपरान्त के काल परिमाण से वो मापा जाता है। 1990 के बाद का काल जिस प्राप्त परिस्थिति का परिपाक है उसे देखा जाए तो यह काल आन्दोलन निर्माण करने का काल नहीं है। अच्छे काव्य के लिए, काव्य शोध के लिए आन्दोलन का भान रहना महत्वपूर्ण होता है। आज का नवनिर्मिति क्षण मन ऐसे ही हर एक नए क्षण का सामना करते हुए दिखाई देता है। आन्दोलन के बिना अगर यह काव्य आत्मबल देने की सामर्थ्यता प्राप्त कर सकता है तो यह काव्य अपना अस्तित्व अपनी सामर्थ्य पर झेल सकेगा।

वास्तविकता से प्रभावित साहित्यिक समकालीन इतिहास का एक साक्षीदार होता है। अपने इर्द-गिर्द होनेवाली सभी घटनाओं का अवलोकन-परिशीलन करता है। आस-पास का वास्तविक स्वरूप अनेक प्रश्न लेकर उसके सामने खड़े होते हैं। इस प्रश्न का जवाब ढूँढ़ना ही जीवन की वास्तविकता को समझ लेना है। लेखक के नाते इस वास्तव को आकार और रूप देने का प्रयास साहित्यिक करता है। नब्बे दशकोत्तर काव्य में ऐसे अनेक कवि अपना आशय और अभिव्यक्ति के द्वारा अपना कलात्मक आविष्कार साकार करने में जुटा हुआ दिखाई देता है।

नब्बे दशकोत्तर मराठी काव्य को महानगरीय काव्य कहा जाता है। महानगर आधुनिक मनुष्य संस्कृति का एक आंशिक प्रतीक है। क्योंकि, आधुनिकता का समग्र रूप महानगर में नहीं आता है। समाज व्यवस्था और अर्थव्यवस्था का चित्र महानगरीय मराठी काव्य में दिखाई देना स्वाभाविक है। इसलिए तेजी से बदलते हुए सामाजिक वास्तव का चित्र नब्बेदशकोत्तर काव्य में कुछ प्रमाण में दिखाई देता है। इस युग की कविता में कुछ भग्न मिश्रित स्वरूप भी दिखाई देता है। यह काव्य परम्परावाद एवं आधुनिकतावाद के भवंडर में खोया हुआ है। इससे निकलकर अपना एक स्वतन्त्र अस्तित्व निर्माण करने की आज इस काव्य को जरूरत है।

समाज में होनेवाले परिवर्तन सभी जगह एक जैसे नहीं होते। वैश्विक स्तर पर जो आन्दोलन हुए जैसे कि कृषि क्रान्ति और उसके बाद हुई औद्योगिक क्रान्ति। कृषि क्रान्ति के दरम्यान काव्य में अधिकतर निस्सर्ग के आधार पर की गई रचनाएँ दिखाई देती हैं, अलंकार रूपक आदि सभी निस्सर्ग रूप में ही दिखाई देता है। संसार को देखने का वो एक नजरिया था। औद्योगिक क्रान्ति ने एक महत्वपूर्ण योगदान दिया। उसने पूर्व परम्परा और आधुनिकता को समग्र रूप में प्रस्तुत किया। औद्योगोत्तर क्रान्ति में 'यन्त्र और यान्त्रिकता' ये समाज की जरूरत होती थी, जो काव्य में प्रचलित हुई। तन्त्रज्ञान से जुड़ी हुई प्रतिमा और प्रतीक का उपयोग यह काव्य अधिकतर करने लगा। उसी के कारण महानगरीय काव्य में तन्त्रज्ञान से बदले हुए अनुभव विश्व का प्रतिबिम्ब दिखाई दिया। एक स्वतन्त्र दृष्टिकोण प्राप्त करने की प्रेरणा थी और ये उसका साहित्य मूल्य भी हो सकता है। पूर्ण रूप से काव्य यह दिशा नहीं झेल सकी।

इसमें महानगरीय ग्रामीण, देशीवाद-विदेशीवाद, परम्परावाद-आधुनिकतावाद ऐसे मिश्रण में वो कार्यरत दिखाई देती है। कई सर्जनशील और संवेदनशील कवियों के काव्य पर महानगरीय वास्तविकता का प्रभाव दिखाई देता हैं। उसके आशय-विषय, प्रतिमा सृष्टि, अस्तित्वभान में महानगरीय जीवन का प्रतिबिम्ब और भी तीव्रता से आना चाहिए। पुराने नए विधियों में फँसे हुए अपनी आज की मानसिकता को उन्हें प्रतिनिधित्व स्वरूप देना चाहिए। इस महानगरीय संवेदना में शहरवासियों के सपनों की पूर्तता करने में असमर्थ हुआ, यह महानगरीय जीवन से दूर होता हुआ निस्सर्ग और मानव सम्बन्ध का विघटन, मध्यमवर्गीय समाज, यान्त्रिक मन, मानवताशून्य मानवतावाद, इन सभी से साकार हुआ यह महानगरीय जीवन और उसकी असमर्थता इनसे भयावह हुआ मन उनका भाव चित्र इस दशक के काव्य का विषय है। इसके साथ ही महानगरीय संस्कृति से जुड़े हुए जीवन मूल्य एवं उनसे संकीर्ण भावना भी उक्त कविता के विषय बने।

नब्बे दशकोत्तर मराठी काव्य का एक ओर वैशिष्ट्य है वो है चिह्नसृष्टि और उससे निर्माण हुई चिह्निय संवेदनशीलता। काव्य में आया हुआ प्रत्येक शब्द अर्थवाही होता है। अचूक शब्द से अर्थों की अनेक धाराएँ निर्माण करने की असामान्य सामर्थ्य काव्य के शब्द में होती है। उसके लिए शब्द में और प्रतिमाओं में प्रसारणशीलता होनी चाहिए।

'बोली अरूपाचे रूप दावीन'
'अतिन्द्रिय ते भोगवीन इन्द्रिया'

ऐसी कवि की प्रतिज्ञा होनी चाहिए। कवि को संवेदना का असह्य बोझ अपने लघुतम रचना में पहुँचाना होता है और उसके लिए आवश्यक होता है उनका जीवन के प्रति निष्ठावान होना।

स्वीकृत तत्वज्ञान के अन्तर्गत अपना ठोस विचार, अविचल प्रमाणिकता और संवेदना को सार्वत्रिक सर्जनशीलता के स्तर पर पहुँचाने वाली भावनामयी प्रज्ञा एवं इन्द्रियनिष्ठ गोचर अनुभव के उस पार केवल भावगम्य अनुभव को शब्दरूप देनेवाला कवि श्रेष्ठ कवि होता है और ऐसे मनोमय जीवन भावनामय रूप से अपने सामने खोलकर रखनेवाली कविता श्रेष्ठ कविता मानी जाती है। इस काल में जो काव्य आता है उनमें दिखाई दी हुई चिह्न सृष्टि उसके गत काव्य के अनुसार अलग दिखाई देती है। काव्यसंहिता के लिए चिह्नात्मक भाषा का बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है जो उनकी काव्यभाषा होती है। अंग्रेजी शब्द का उपयोग करना एक और काव्य की विशेषता है। अनेक समीक्षकों को यह मराठी भाषा में आया हुआ सभी से बड़ा धोखा दिखाई देता है। इस चिह्न सृष्टि का अपने मनोविकास पर जीवन विकास पर बहुत प्रभाव दिखाई देता है।

मन्या जोशी, नितिन अरुण कुलकर्णी जैसे कवियों को अपने काव्य में शहरी संस्कृति को प्रकट करते समय अंग्रेजी शब्द जरूरी लगते हैं। विविध क्षेत्र में कार्य करते समय जो घुटन होती है, वो पारम्परिक बंधन से बाहर निकलकर कृत्रिम बंधन में अटकना उन्हें अमान्य है। शहरी संस्कृति का वास्तवरूप उनके कविता का अनुभव विश्व हैं किसी भी भाषा का मिश्रण करते समय काव्य का सन्तुलन रखना नितान्त आवश्यक होता है। शब्द को प्रायोगिक तत्व पर उपयोग करके उसे स्थिर करने का साहस इस काव्य में दृष्टिगोचर होता है। रवीन्द्र इंगले चावरेकर कवि ने तो लुप्तप्राय हुई भाषा का अपने अस्तित्व शोध के लिए उपयोग किया है। लीलात्मक भाषा का (यादवकालीन) ओवीस्वरूप उपयोग अपने काव्य में करके इस दशक में एक विलक्षण प्रयोग किया है। कविता में आनेवाली प्रतिमा वह उस कवि के अस्वस्थ विश्व का अपरिहार्य और भावात्मक भाग बनकर आती है। पृथ्वी, पानी, पेड़, पशु, पंछी, आग आदि सभी आदिम प्रतिमाएँ हैं। आज के आधुनिक युग के उपकरण संगणक, मोबाइल, इटरनेट, ईमेल ये सभी चीजें आज जीवन और व्यक्तित्व का एक अविभाज्य अंग बन गई हैं। लेकिन सिर्फ नए प्रतिमान एवं भाषा-शैली के आधार पर किसी भी कविता को नई कविता नहीं कहा जा सकता है। कवि के मन में समकाल के लिए और उनके अन्वयार्थ के लिए नई अस्वस्थता नया दृष्टिकोण बनाना आवश्यक है।

नब्बेदशकोत्तर मराठी काव्य में दिखाई देनेवाला सामाजिक स्तर काल के प्रवाह में बदला हुआ दिखाई देता है। यह सामाजिकता केशवसुत, मर्ढेकर, सुर्वे आदि कवियों के काव्य में दिखाई देती है। व्यवहार के साधन बदल गए, नई टेक्नॉलोजी, मोबाइल, इन्टरनेट आदि सभी चीजें जीवनावश्यक हो गईं। 'हम ग्लोबलाइज' हो गए और संसार छोटा हो गया, यह भावना प्रबल होने लगी है। जिसे कि हम कई काव्यों में देख सकते हैं। कई कविताओं में जो सामाजिक जीवनानुभव दिखाई देता है वह प्रत्यक्ष में कवि अनुभव कम और उधार का अनुभव ज्यादा दिखाई देता है। जो कि उनके द्वारा कई माध्यमों से लिया हुआ होता है। कई बार ऐसा भी होता है, कि पुराने अनुभव नए प्रतिमानों के साथ और पुराने प्रतिमान नए अनुभवों के साथ प्रयोग किए जाते हैं जो कि ठीक नहीं है। इसीलिए कई बार उसमें से काव्य खो जाता है। काव्य में कहीं-कहीं वक्तृत्व और गद्य प्रायःशैली का प्रयोग दिखाई देता है, तो कई बार आज के काव्य में सामाजिकता का स्तर प्रचार के स्तर पर होते हुए दिखाई देता है, तो कई बार आज के काव्य में सामाजिकता का स्तर प्रचार के स्तर पर होते हुए दिखाई देता है। जिससे उसमें जो सर्वसमावेशकता रहती है उसे धोखा निर्माण हो जाता है, और इसलिए कविता में एक प्रकार की बन्दिश आ जाती है।

नब्बेदशकोत्तर काव्य में प्रयोगशीलता यह एक और वैशिष्ट्य दिखाई देता है। उसमें दीर्घ कविता, स्वगत या एक भाषिक प्रयोग, संवादप्रिय शैली, पाम्परिक लोकगीत के स्तर पर जानेवाली कविता, देशीय, भाषौ शैली का प्रयोग करनेवाली कविता, गजल, हायकू, कणिका, बालगीत, गीत रचना, शीर्षकहीन कविता, मराठी संवेदनशीलता के साथ-साथ अन्य संस्कृति धर्म की संवेदनशीलता का आधार लेनेवाली कविता ऐसे भिन्न-भिन्न प्रयोग आज के काव्य में दिखाई देते हैं। जैसे अशोक बागवे, उत्तम कोलकगांवकर, हिमांशु कुलकर्णी, मीनल कुलकर्णी, आसावरी काकड़े, अनुराधा पाटिल, नारायण कुलकर्णी कवठेकर, अरुण म्हात्रे, नीरजा, इन्द्रजीत भालेराव,

श्रीधर तिलवे, लोकनाथ यशवंत, रजनी परुलेकर, अरुणा ढेरे, अनुराधा पोतदार, प्रकाश होलकर, अशोक नायगांवकर, विट्ठल वाघ, सुधाकर गायधनी, सु.म. तडकोड, आदि कवियों का नामोल्लेख किया जा सकता है।

हेमंत दिवटे 'चौतिशीपर्यंतच्या कविता' इथे दिव्यांच्या उजेडात/मी गुदमरतोय/आणि फ्लश करतोय/भरून आलेलं मन/मनातल्या मनात'

आपण म्हणजे ब्रेडची स्लाईस आहोत/आणि आपल्याला मसका लावून/नागवलं जातय सगलीकडून उगाचच'

किशोर कदम 'सौमित्र' अवघड़ गणित जगण्याचं सोपं करत जाय/कम्प्युटरशी माइया मायचं देणं घेणं नाय?

सचिन केतकर 'अश्मयुगाअतल्या अनोलख्या/राक्षसी प्राण्यासाखा संथ/रेडा कुरणातून तरंगतो' रमेश यशवंत वाकनीस 'आकाशा' इस कविता से–

एक करशील, आकाश?/तुइया छातीत उसलणारा लाव्हा,/माइया कानात ओतशील का?/विध्वंसाची तेवढीच शिकवण/माइयाही मातीच्या हाताना!

आज के काव्य में स्त्रीवादी विश्व भी केवल सात्विक संकल्पना में फँसा हुआ नहीं दिखाई देता है। धीरे-धीरे उनके अस्तित्व का विस्तार होने लगा है। परम्परागत करुणा, बेबसी के साथ-साथ कविता की रचनाएँ, उसके आन्तरिक और बाह्य सौन्दर्य में भी वो विशेष रुचि लेने लगी है। आज की कवियित्रयों में ज्ञानदा, कविता महाजन, अनुराधा पोतदार, रेखा ठाकुर, दया मित्रगोत्री, आशा मणगुतकर आदि कवियित्रयों के नाम आते हैं। रजनी परुलेकर, सुनन्दा भोसेकर, अंजली किर्तने, प्रज्ञा लोखंडे, अरुणा ढेरे, अंजली कुलकर्णी, नीला भागवत, वासंती अभ्यंकर, सुनीता जोशी, आसावरी काकडे, मीना प्रभु, रेखा मिरजकर, शैला सायनेकर आदि कवियित्रियों ने अपने काव्य में महानगरीय संवेदना प्रकट की है।

प्रज्ञा लोखंडे–'मुक्ति दे मला/या सभीकष रितेपणातून/जगू दे मला नेणिवेच्या उत्कट अंधार/भोगू दे मला/कर्त्याच्या अभावाचा गंधार/पाहु दे मला/दुःखाची पालंमुलं/इत्थंभूत पसरणारी–

कविता आती है शब्दों से, सुरों से, एक ताल एक लय लेकर भिन्न-भिन्न रंगों से सजी हुई किसी के मौन में तो किसी के भ्रम-विभ्रम को सहलाती हुई। काव्य में आई हुई प्रतिमा-रूपक और प्रतीक इन्द्रियगम्य वस्तु के दर्शन से प्रकट होती है। मन में निर्माण हुए सचेतन, अनुबन्ध, संवाद और संघर्ष से कविता साकार होती है। काव्य से अन्तरंग का दर्शन होता है। अन्तरंग कभी भयग्रस्त, तो कभी तड़पता हुआ, तो कभी प्रसन्न होता है। वह मानवी अंतरंग का शोध होता है। उसका आशय अस्वस्थ कर लेता है। उसमें आई हुई अस्तित्व वेदना मन को निचोड़ लेती है।

आज तो काव्य में वृत्ति-प्रवृत्तियाँ दिखाई देती है उनकी शुरुआत तो आधुनिक काल से हुई है। काव्यवृत्ति याने कवि के मन की वृत्ति। जिसे हम प्रतिभा कहते हैं। अन्तर्मुखता ये उसका पहला लक्षण है तो सर्जनशीलता उसका दूसरा महत्वपूर्ण लक्षण माना जाता है। प्रत्येक मनुष्य का जीवन के प्रति एक विशेष दृष्टिकोण होता है। घटना, प्रसंग व्यक्ति और अनुभव को देखते समय वो एक विशिष्ट दृष्टिकोण से देखता है। वो व्यक्ति उस पर किए गए संस्कार, उसका परिवेश, परिसर पर अवलंबित होता है। एक कवि विशिष्ट पद्धति में ही काव्य रचना क्यों करता है, इसका जवाब उनकी काव्यवृत्ति है। इसलिए बालकवि की निसर्ग कविता केशवसुत के निसर्ग काव्य से अलग दिखाई देती है। क्योंकि उनकी काव्यवृत्ति उसके मनःपिंड से बनी हुई होती है।

इस कालखण्ड में अनेक कवि अपनी-अपनी काव्यवृत्ति के अनुसार काव्य लेखन करते हुए दिखाई देते हैं। कवितारति, शब्दबेध, अभिद्या, अभिधानंतर, नव्याची चलवल, दर्शन जैसे लघु अनियतकालिका में ये कवि अपना काव्य प्रस्तुत कर रहे हैं। जिनमें अनेक कवियों का नाम ले सकते हैं। नीलकंठ महाजन, एकनाथ पगार, सु.म. तडकोड, माधव सटवाणी, प्रकाश क्षीरसागर, मंगेश नारायण काले, नितिन कुलकर्णी, श्रीधर तिलवे, नितिन रिढे, गणेश विसपुते, वर्जेश सोलंकी, आल्हाद भवसार, प्रफुल्ल शिलेदार, विलास पाटिल, सलील वाघ, भिमराव में श्राम, युवराज गंगाराम, लोकनाथ यशवंत, मनोहर ओक, प्रवीण बांदेकर, अशोक मणगुतकर, प्रकाश क्षीरसागर, आदि कवियों की रचनाओं का विशेष योगदान रहा है।

दैनिक व्यवहार के सामान्य प्रश्न, उससे निर्माण हुई समस्या, अन्तर्गत जीवन में पलपल भयचकित करनेवाले कई प्रश्न, बदली हुई जीवन शैली, मानवी जरूरतें, और मांगल्य, विश्व के पृष्ठभाग पर प्रस्थापित किया हुआ नाता, अपरिहार्य संवाद और सम्बन्ध की भावना सभी स्तर पर मूल्य व्यवस्था

का ढहना, भाव-भावनाओं का हुआ तान्त्रिकीकरण, नए संवादित्व निर्माण होने की आवश्यकता आदि विषय काव्य में आते हैं। हेमंत दिवटे, नितिन कुलकर्णी जैसे कवियों के काव्य में जीवन के मूल प्रश्न पर आधारित की गई काव्यरचनाओं में स्वच्छन्दतावाद और आधुनिकतावाद का मिश्रण दिखाई देता है। रमेश इंगले उत्रादकार जैसे कवि के काव्य में सांस्कृतिक अभिसरण का स्रोत दिखाई देता है।

आज के ग्रामीण कवियों में श्रीकान्त देशमुख, इन्द्रजीत भालेराव, राजन गवस, नारायण सुमन्त, प्रकाश होलकर, प्रदीप पाटिल, सदानन्द देशमुख ने परम्परा और आधुनिकता के बीच का तनाव, किसानों की लूटमार, अतिवृष्टि और अकाल के परिणाम से जूझता हुआ किसान, राजनैतिक के अपव्यवहार से हुआ तनावग्रस्त जीवन, इससे एक विद्रोह का बीज इन कविताओं में दिखाई देता है।

काव्य में दिखाई देने वाली एक और विशेषता यह है कि, काव्य रसिक मन को भाता है। यह एक काव्य लक्षण माना तो आज के काव्य में मन सुन्न करनेवाला या मन प्रसन्न करनेवाला, हृदय हिलानेवाला और अपने विचार-विश्व पर आघात करनेवाला प्रमार्थि और प्रसन्न काव्य दिखाई देता है क्या? तो कुछ काव्य के बारे में यह कहा जा सकता है। आज का काव्य अपने आपमें अंतःप्रेरणा की पहचान है। वो केवल बाह्यप्रवृत्ति की ही शरण में नहीं जाता है, उसमें एक संवेदना है। अपने आसपास रचित किसी भी तरह का काव्य होने के बावजूद अपना अंतःस्वर प्रगट करनेवाले अनेक कवि हैं।

इन सभी कवियों ने नई मूल्य व्यवस्था को स्पर्श किया हुआ है फिर भी काल की सभी चुनौतियों को ध्यान में रखकर उसका प्रतिनिधित्व उन्हें करना होगा। नए कवि का उत्साह बढ़ता हुआ दिखाई देता है, तो पुराने कवि 'नया कुछ नहीं सब पुराना' ऐसी वृत्ति में दिखाई देते हैं। आज की काव्य रचना को देखते हुए यही कहना उचित होगा कि, तीव्र गति से बदलते हुए सामाजिक वास्तविकता के अस्तित्व को पहचानना, काव्य में व्यक्ति-विशिष्टता होने के बजाए आत्मनिष्ठा का होना, अपने आपको विशिष्ट प्रवाह के बन्धन में बाँधने के बजाए अपने आसपास के सभी बंधनों को पार करके 'स्व' विश्व से निकला हुआ स्वर प्रकट करना होगा। क्योंकि हम सभी वैश्वीकरण के पार्श्वभूमि पर खड़े हैं।

मराठी काव्य के सन्दर्भ में संक्षिप्त रूप से लिया हुआ यह आलेख है, जिसे परिपूर्ण नहीं कहा जा सकता। इस काल में मराठी काव्य में जो वृत्ति-प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं उनका अल्प परिचय देने का यह एकमात्र प्रयास है।

यह प्रपत्र प्रस्तुत करने की असाधारण संधि मुझे 'प्रयास' के आयोजकों तथा डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र जी ने दी। अतएव उन सभी लोगों के प्रति मैं कृतज्ञता का भाव प्रकट करती हूँ।

धन्यवाद।